माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा करनाल में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह 2015 में दिया गया भाषण।

प्यारे देषवासी भाईयो व बहनो! 66वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर मैं आप सबको पूर्ण मनोयोग से अपने अंतःकरण से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

आज का दिन हमारे देष के इतिहास में वह महान दिन है, जब हमने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का नागरिक होने का गौरव पाया। आज से 65 साल पहले 26 जनवरी, 1950 को हमारे देष में गणतंत्र का नया सूरज उगा।

हमने अपने देष के लिये दुनियां का सबसे बड़ा और खास संविधान अपनाया। इसमें सभी को बराबरी, इन्साफ, विचारों की आजादी और उन्नति के समान अवसर उपलब्ध कराये गए। इसलिए आज का दिन खुषियां मनाने का दिन है। साथ ही यह कुछ संकल्प लेने का अवसर भी है।

आप जानते हैं कि 26 जनवरी, 1950 को गणतन्त्र बनने से लगभग अढाई साल पहले हमने गुलामी की बेड़ियां काटकर स्वतंत्रता की हवा में सांस ली थी। यह गणतंत्र हमें राष्ट्रीय स्वतत्रता संग्राम में किए गए लम्बे संघर्ष के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है। इसलिए गणतन्त्र दिवस से आजादी के आंदोलन की हमारी अनेकानेक यादें जुड़ी हुई हैं। उस संघर्ष में अनेकानेक कुर्बानियां दी गईं, अनेकानेक कष्ट उठाए गए और अनेकानेक मुसीबतें झेली गईं। मैं स्वतंत्रता संग्राम के उन सब षहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिनके बलिदानों से हमें गणतंत्र का यह उत्सव मनाने का सुअवसर मिला है।

मैं उन स्वतंत्रता सेनानियों को भी नमन करता हूं जिन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य को समाप्त करने के लिए अनेक यातनाएं सहीं। आजादी की लड़ाई के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने हमें सर्वधर्म समभाव का पाठ पढाया। उन्होंने ऐसे आदर्ष राज्य की कल्पना की थी जिसका आधार सच्चाई व अहिंसा हो और जहां लोगों में जाति, धर्म अथवा वर्ग के आधार पर कोई भेदभाव न हो। इसके अनुकूल षासन प्रणाली बनाना एक बहुत बड़ी चुनौती थी जिसे बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर जैसे संविधान निर्माताओं ने बड़ी सूझ–बूझ से गढा और लोकजन को समर्पित किया। इसका ढांचा संघीय है तथा आत्मा एकात्मक है।

बहनो व भाईयो! मैने पहले कहा कि यह खुषियां मनाने का अवसर है, लेकिन साथ ही चुनौतियों से भरा समय भी है। आजादी से पहले अंग्रेजों ने हमारे उद्योग–धन्धों को नष्ट कर दिया था। लेकिन आज हालात बदल चुके हैं। 20वीं सदी में हमने आजादी पाई और उसके बाद से अब तक के नवनिर्माण के दौर में भारत दुनिया की बड़ी षक्ति के रूप में उभरा है। साथ ही हमने एक सुदृढ़, परिपक्व और गतिशील प्रजातंत्र के रूप में समस्त विश्व में अपनी पहचान बनाई है। फिर भी कुछ ऐसी षक्तियां हमारे सामने कड़ी चुनौती पेष कर रही हैं जो गणतांत्रिक मूल्यों और कानून के राज को नकारकर देष में अराजकता की स्थिति पैदा करना चाहती हैं।

इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि गणतंत्र महज कागज पर लिखा संविधान नहीं है। यह एक जीवन पद्धति है। यदि हम इसे अपने जीवन में नहीं उतारते हैं, इसके अनुरूप आचरण नहीं करते हैं, कानून के राज में विष्वास नहीं करते हैं, संविधान का आदर नहीं करते हैं तो हमारा गणतंत्र दिवस मनाना सार्थक नहीं कहा जा सकता।

भाईयो और बहनो! प्रजातन्त्र में देष के लोगों को अपने अधिकारों की प्राप्ति के साथ–साथ देष के प्रति अपने फर्ज को निभाना भी बहुत जरूरी है। आज हमारे देष व समाज के सामने आतंकवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूणहत्या, महिलाओं के विरूद्ध अपराध, उपभोक्तावाद व भौतिकवाद से उपजी अनेक बुराईयां चुनौती बन गई हैं। इन सबका मुकाबला उच्च चरित्र–निर्माण से ही किया जा सकता है। यदि लोक–चरित्र मजबूत होगा तो लोकतंत्र भी मजबूत होगा।

अतः गणतंत्र दिवस पर मैं हर नागरिक, विषेषकर, नौजवानों का आह्वान करता हूं कि वे भारत की महान संस्कृति की महान परम्पराओं को आगे बढाते हुए समाज की कुरीतियों को उखाड़ फैंकें। ऐसा करके ही हम सामाजिक समरसता की स्थापना कर सकेंगे जिसमें हर स्त्री–पुरूष भयमुक्त होकर समाज के उत्थान में पूरा योगदान कर सकेगा और हम 21 वीं सदी का समृद्ध व सषक्त भारत बना सकेंगे।

मैं गणतन्त्र दिवस के पावन अवसर पर हरियाणावासियों को इस बात की भी बधाई देता हूं कि उन्होंने कड़ी मेहनत और सच्ची लगन से हरियाणा राज्य को अनेक क्षेत्रों में देष का एक अग्रणी राज्य बना दिया है। प्रदेष सरकार ने सुषासन प्रदान करने के लिए भ्रष्टाचार के खिलाफ जो अभियान चलाया है, वह सराहनीय है।

इसी दिषा में लोगों की षिकायतों और समस्याओं के निवारण के लिए हर जिला मुख्यालय पर सी0 एम0 विंडो की स्थापना, ई–दिषा केन्द्रों के माध्यम से जमीनों की रजिस्ट्री करना जैसे कार्यक्रम अत्यन्त कारगर साबित होंगे। राज्य में

डिजिटल इंडिया, प्रधानमंत्री जनधन योजना, स्वच्छ हरियाणा– स्वच्छ भारत, सांसद आदर्ष ग्राम योजना आदि योजनाएं भी तेजी से लागू की जा रही हैं। हाल ही में प्रधानमंत्री ने बेटी बचाओ–बेटी पढाओ योजना का षुभारम्भ भी हरियाणा में ही पानीपत से किया है।

हरियाणा सरकार ने इसी दिषा में आगे बढते हुए राज्य में लोहड़ी के पावन पर्व पर बेटियों की लोहड़ी मनाई है। आप जानते हैं कि हमारे यहां बेटों की पहली लोहड़ी मनाने की परम्परा रही है जिसमें बेटे के जन्म पर खुषी मनाई जाती है। लेकिन यही खुषी हमें बेटियों के जन्म पर भी मनानी चाहिए।

गणतंत्र दिवस के इस पावन अवसर पर मैं सब नागरिकों और समाजसेवी संस्थाओं से अपील करता हूं कि वे 'बेटी बचाओ–बेटी पढाओ' योजना को सफल बनाने के लिए सक्रिय योगदान करें। लिंग अनुपात को संतुलित करने के लिए कन्या भ्रूण हत्या न करने और न करने देने का संकल्प लें और साथ ही बेटियों को जीवन में आगे बढने का हर अवसर प्रदान करें।

हमें गर्व है कि भौगोलिक दृष्टि से छोटा राज्य होते हुए भी हरियाणा की प्रगति की आज देष–विदेष में चर्चा है। राज्य में मेट्रो रेल का विस्तार हो रहा है और अनेक ओवर ब्रिज व फ्लाई ओवर बन चुके हैं। फरीदाबाद से बल्लबगढ तक और फरीदाबाद से गुड़गांव के बीच मैट्रो लिंक का विस्तार करने की योजना बनाई गई है।

प्रदेष में नहरों, सड़कों व रेलमार्गों का मजबूत जाल बिछा है और उद्योग धंधे फल–फूल रहे हैं। प्रदेष में आधुनिक षिक्षा के हर संकाय और विषय की षिक्षा देने के लिए अनेक विष्वस्तरीय षिक्षण संस्थानों सहित 43 विष्वविद्यालय खुल चुके

हैं। अन्न उत्पादन में हरियाणा का देष में दूसरा स्थान है और खेलों में भी हरियाणा की देष–विदेष में पहचान बनी है।

हमारे खिलाड़ियों ने ओलम्पिक, कामनवैल्थ, एषियाई खेलों और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर अपनी षारीरिक दक्षता, दमखम, और मानसिक दृढता का लोहा मनवाया है। लंदन ओलम्पिक में भारत के 6 पदक विजेता खिलाड़ियों में से चार हरियाणा के थे।

इसी साल सम्पन्न राष्ट्रमंडल खेलों में देष के खिलाड़ियों द्वारा जीते गए कुल 64 पदकों में से 20 हरियाणा के खिलाड़ियों ने जीते हैं। पिछले साल जूनियर महिला हाकी विष्व कप में कांस्य पदक जीतने वाली टीम में हरियाणा की छह बेटियां षामिल थीं।

इन उपलब्धियों के लिए मैं खिलाड़ियों और सभी प्रदेषवासियों को बधाई देता हूं। हरियाणा सरकार ने हाल ही में नई खेल नीति लागू की है। इसमें ओलम्पिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले खिलाड़ी को 6 करोड़ रूपये, रजत पदक विजेता को 4 करोड़ और कांस्य पदक विजेता को अढाई करोड़ रूपये की राषि पुरस्कार के रूप में दी जाएगी। अन्य अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय प्रतियोगतिओं में पदक जीतने वालों को भी नकद पुरस्कार राषि और पदक के अनुसार पद भी प्रदान किए जाएंगे। ग्राम स्तर से राज्य स्तर तक खेल परिषदों का गठन भी किया जाएगा।

इस तरह अब खिलाड़ियों को अपने भविष्य व रोजगार की चिंता करने की जरूरत नहीं रही। अब खेल उज्ज्वल भविष्य की गारंटी बन गया है। मुझे विष्वास है कि इस खेल नीति से प्रोत्साहन पाकर हमारे खिलाड़ी और भी नई व बड़ी

उपलब्धियां हासिल करेंगे और प्रदेष में खेल संस्कृति का विकास होगा।

खेल नीति के अलावा अब प्रधानमंत्री के 'मेक इन इंडिया' विजन पर चलते हुए राज्य में नई उद्योग नीति भी बनाई जा रही है। मुझे विष्वास है कि यह राज्य में उद्योगों के विकास में अत्यन्त कारगर सिद्ध होगी।

एक कल्याणकारी राज्य होने के नाते हरियाणा सामाजिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध है। समाज के कमजोर वर्गों की दषा सुधारने के लिए राज्य में अनेक कल्याणकारी योजनाएं लागू की गई हैं। राज्य में विकास व प्रगति का लाभ गरीब से गरीब व्यक्ति तक पहुंचाकर उनके लिए रोटी, कपड़ा व मकान सुनिष्चित करने की कोषिष की जा रही है। हाल ही में बुढापा, विकलांग व विधवा पेंषन बढाकर 1200 रूपये मासिक की गई है। इसमें हर साल 200 रूपये की बढोतरी होगी और पांच साल बाद यह दो हजार रूपये मासिक हो जाएगी।

मैं इन उपलब्धियों के लिए राज्य सरकार, उद्यमियों, कर्मठ किसानों और श्रमिकों को बधाई देता हूं। यह गौरव की बात है कि एकता, भाईचारा और परस्पर सौहार्द हरियाणा की परम्परा रही है। मुझे उम्मीद है कि आप इस परम्परा को सदैव बनाए रखेंगे। देष विरोधी ताकतों के घिनौने इरादों को विफल करने का यह कारगर उपाय है।

भाईयो और बहनो! मुझे आज महावीर–दानवीर कर्ण की नगरी करनाल में गणतंत्र दिवस समारोह में बोलते हुए बड़े गर्व का अनुभव हो रहा है। इस क्षेत्र के लोग कभी से ही बड़े प्रगतिषील रहे हैं। आपने अपनी मेहनत और सूझबूझ से न

केवल करनाल को अन्न का कटोरा बनाया है बल्कि यहां का चावल देष–विदेष में मषहूर है।

यहां पर स्थापित राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, चावल, गेहूं, गन्ना अनुसंधान केन्द्र आदि देष में कृषि क्षेत्र को आधुनिक तकनीक प्रदान करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। यहां के बने कृषि उपकरण भी विख्यात हैं। यहां की समाजसेवी संस्थाएं अनाथ बच्चों, गरीबों व किसी भी प्रकार की पीड़ा से दुखी मानव की जो सेवा कर रही हैं उससे जाहिर होता है कि महावीर दानवीर कर्ण ने दानषीलता की जो नींव डाली थी उस परम्परा को यहां के लोग अभी भी अपनाए हुए हैं। यहां की बेटी कल्पना चावला का नाम तो जुबान पर आते ही हर भारतीय का सीना गर्व से फूल जाता है। इस प्रकार देष के नवनिर्माण में करनाल की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए आज के इस ऐतिहासिक दिवस पर भी यहां से पूरे देष के लिए ऐसा संदेष जाना चाहिए कि हर भारतवासी 21वीं सदी का समृद्ध व सषक्त भारत बनाने के लिए अपना अधिकतम योगदान करे।

इस ऐतिहासिक दिवस पर जब हम अपना गणतंत्र दिवस मना रहे हैं तो आइये हम राष्ट्र की एकता और अखण्डता को बनाये रखने तथा देष के नव–निर्माण के लिए मिलकर काम करने की शपथ लें। मैं आप सबको गणतन्त्र दिवस की फिर से बधाई देता हूं और आप सबके सुखी और सुनहरे भविष्य की कामना करता हूं।

जयहिन्द!